❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 फरवरी, 2021 से रविवार 21 फरवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

बलिदान दिवस : बसन्त पंचमी (16 फरवरी) पर विशेष

बाल वीर हकीकत राय के बलिदान को शत-शत नमन

बालवीर हकीकत राय
जन्म- 1719
बलिदान- 1734

बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता किंतु इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में अंकित महान वीर बलिदानियों की अमर गाथा हमेशा नित, नूतन,नवीन प्रेरणादायक का संदेश देती हैं, वे बहते हुए काल प्रवाह के साथ पुरानी नहीं होती। वीर हकीकत राय का बलिदान एक ऐसी घटना है जो तीन शताब्दियों के बीत जाने पर भी उतनी ही प्रासंगिक है जितना कि उस समय थी। क्योंकि वर्तमान स्थिति में भी अनेक मतावलंबी हिंदुओं को लगातार चोट पहुंचा रहे हैं और हिंदू जाति ऐसी गहरी निद्रा में सोई हुई है या ऐसा कहें कि कबूतर की भांति बिल्ली को सामने देखकर भी आंखें बंद किए हुए है, उसे लगता है की अपनीआंखें बंद करने से बिल्ली का भय नहीं रहेगा। जबकि बिल्ली घात लगाकर मंगोलपुरी की क्रूर घटना के सदृश लगातार हमले पर हमले कर रही है और हम उन हमलों का शिकार होकर भी हम जागने को तैयार नहीं हैं, इसलिए आज राष्ट्र को जागृत होने की जरूरत है, सावधान होने की आवश्यकता है, वीर हकीकत राय के बलिदान से प्रेरणा लेकर अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों की रक्षा के लिए सेवा और समर्पण की भावना और कामना के साथ अपने मन को संकल्पित करने की आवश्यकता अत्यन्त अनिवार्य है । बसंत पंचमी पर्व की बधाई एवं वीर हकीकत राय के बलिदान को शत-शत नमन - सम्पादक

भारतीय संस्कृति में पर्व-त्योहारों के महत्वपूर्ण क्रम में हर वर्ष बसंत पंचमी का पर्व मनाना हमारी प्राचीन आदर्श परंपरा है। किंतु इस पर्व के इतिहास में बालवीर हकीकत राय के अमर बलिदान से प्रेरणा लेना, अपनी सोई हुई चेतना को जागृत करना, देश-धर्म की आन-बान और शान के सम्मान में, उसकी सुरक्षा के प्रति सावधान रहना, इसके लिए अपने मन को संकल्पित करना, इस पर्व का विशेष संदेश है। 14 वर्ष की किशोर अवस्था थी, मानव जीवन की प्रथम पाठशाला घर में ही माता-पिता द्वारा धर्म-संस्कृति और संस्कारों की उत्तम शिक्षा प्राप्त हुई। जिसे तरुण क्रांतिकारी बालक ने हृदयांगम किया हुआ था। कुशाग्र बुद्धि और अपनी तर्क शक्ति के बल पर वीर हकीकत राय कक्षा में सबसे आगे रहता था। इसी कारण उसके मुस्लिम सहपाठी उससे नफरत करते थे। एक दिन जब कक्षा में मौलवी के न होने पर मुस्लिम बच्चों ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अपमान करना शुरू कर दिया और जब हद कर दी तो वीर हकीकत राय ने उन्हें समझाते हुए कहा कि अगर मैं भी इसी तरह फातिमा मोहम्मद के लिए बोलूं तो क्या तुम सहन कर सकोगे? अत: आपको इस तरह हमारी संस्कृति का अपमान नहीं करना चाहिए। इस पर षड़यंत्र के तहत मुस्लिम बच्चों ने शोर मचा दिया कि हकीकत राय ने बीबी फातिमा को गालीयां दी हैं, इस्लाम का अपमान किया है, हमारे मोहम्मद का अपमान किया है। मुस्लिम बच्चों ने वीर हकीकत राय के साथ हाथापाई भी की, लेकिन सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि मौलवी ने भी मुस्लिम बच्चों का पक्ष लिया और हकीकत राय को स्यालकोट के स्थानीय हाकिम अदीना बेगम के सामने पेश कर दिया।

यह हृदय विदारक घटना सन् 1734 की है। उस समय न्याय के स्थान पर अन्याय का पलड़ा भारी था, सत्य की जगह असत्य का बोलबोला था, "जिसकी लाठी उसी की भैंस" वाली स्थिति कायम थी, मुस्लिमों का जुल्मों सितम सिर चढ़कर बोल रहा था। तभी तो एक साधारण से बच्चों के विवाद की घटना इतनी बड़ी

- शेष पृष्ठ 5 पर

राष्ट्र प्रेमी, धर्म रक्षक, संस्कारवान नौजवान रिंकू शर्मा को आर्य समाज की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आर्यसमाज ने दी पीड़ित परिवार को एक लाख रुपए की सहयोग राशि

रिंकू शर्मा मरे नहीं, बल्कि उन्होंने देश और हिंदू जाति के ऊपर दिया बलिदान दिया - विनय आर्य

25 वर्ष की युवा अवस्था में अपने राष्ट्र, धर्म और संस्कृति को समर्पित युवा रिंकू शर्मा को श्रद्धांजलि देने वालों का विशाल जनसमूह उपस्थित था। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, बीजेपी दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता, सांसद श्री हंसराज हंस जी, श्री आलोक जी और अनेक अन्य महानुभाव उपस्थित थे। आज सबकी आंखें नम थी और लोगों की जुबान पर एक ही नारा था कि "रिंकू शर्मा अमर रहे।" किंतु रिंकू शर्मा एक ऐसा नौजवान था जो मानव सेवा और परोपकार के कार्य लगातार करता था। बताया जाता है कि मुख्य अपराधी की पत्नी को भी उसने कभी खून देकर उसकी जान बचाई थी, उसके भाई की भी कोरोना काल में उपचार में सहायता की थी। ऐसे गुण, कर्म, स्वभाव वाले नौजवान की कई क्रूर लोगों ने मिलकर लाठी, डंडों और चाकुओं से गोदकर हत्या कर दी और यह भी भारत की राजधानी दिल्ली के अंदर।

जन्म : 1995 मृत्यु : 10 फरवरी, 2021

इससे भी ज्यादा हैरानी की बात यह है कि यहां की सरकार गूंगे बहरों की तरह मूक दर्शक बनी हुई है। जिस सरकार के मुखिया किसान आंदोलन से लेकर देश के समस्त राजनीतिक मुद्दों पर बोलते नहीं थकते। आज वे मौन साधे हुए हैं। इस तरह के कई ज्वलंत प्रश्न रिंकू शर्मा की श्रद्धांजलि सभा में उठने स्वाभाविक थे। यह शोक सभा बजरंग दल दिल्ली प्रांत द्वारा 14 फरवरी, 2021 को दिल्ली के मंगोलपुरी में आयोजित की गई थी। इसमें युवा, वृद्ध, स्त्री और बच्चे हर वर्ग के लोग शामिल थे।

इस दु:ख की घड़ी में आर्य समाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने रिंकू शर्मा को श्रद्धांजलि देते हुए उनके पीड़ित परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की। श्री विनय आर्य जी ने सभा की ओर से पीड़ित परिवार को एक लाख रुपए की सहयोग राशि भी प्रदान की। रिंकू शर्मा के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उन्होंने स्पष्ट कहा कि रिंकू शर्मा मरे नहीं हैं बल्कि उन्होंने अपने देश और हिंदू जाति के ऊपर बलिदान दिया है। उन्हें हम महान बलिदानी के रूप में देखें। मैं आर्य समाज की ओर से महान वीर बलिदानी रिंकू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने रिंकू शर्मा अमर रहे के नारे भी लगवाए। इसी बीच जब रिंकू शर्मा की माता जी श्रद्धांजलि सभा स्थल पर उपस्थित हुई तो श्री विनय आर्य जी ने कहा कि एक मां की पीड़ा को हम समझ सकते हैं;

- शेष पृष्ठ 4 पर

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

मुझ पर अपना करुण हस्त रख दो

क्व स्य ते रुद्र मृळयाकुर्हस्तो यो अस्ति भेषजो जलाषः।
अपभर्ता रपसो दैव्यस्याभी नु मा वृषभ चक्षमीथाः।। -ऋक. 2/33/7
ऋषिः-**गृत्समदः।।** देवता-**रुद्रः।।** छन्दः-**त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **रुद्र** = हे रुद्र! दुःख-रोगनाशक! **ते** = तेरा **स्यः** = वह **मृळ्याकः** = सुखदायक **हस्तः** = हाथ **क्व** = कहाँ है, **यः** = जो **भेषजः** = औषधमय और **जलाषः** = आनन्दजनक **अस्ति** = है जो **दैव्यस्य** = देवसम्बन्धी **रपसः** = पाप का, रोग का **अपभर्ता** = दूर करनेवाला है? **वृषभ** = हे सुखवर्षक! तू **नु** = अब तो **मा** = मुझे **अभिचक्षमीथाः** = क्षमा कर, सहन कर।

विनय - मैंने निःसन्देह बहुत अपराध किये हैं। उन्हीं का फल भोगता हुआ मैं आज इतना दुःखी हूँ, आर्त हूँ, रोगग्रस्त हूँ, परन्तु हे रुद्र! मैं जानता हूँ कि तुम जहाँ ताड़ना करते हो, वहाँ प्रेम भी करते हो। तुम रुद्र हो, तो वृषभ भी हो। तुम कभी तुरन्त दण्ड देते हो, तो कभी सहन (क्षमा) भी करते हो। तुम्हारा कठोर हाथ जहाँ हमारी ताड़ना करता है, वहाँ तुम्हारा करुणहस्त हमपर प्रेम भी दिखलाता है। मैं आज तुम्हारे उस भयदायक हस्त का तो अच्छी तरह अनुभव करता हूँ जोकि उग्ररूप होकर हमारा दण्डविधान करता है, परन्तु मैं जानता हूँ कि तुम्हारा वह दूसरा 'मृळयाकु' सुखदायक हस्त भी है जोकि कल्याणरूप होकर हमें शान्ति और सान्त्वना प्रदान करता है। मैंने अवश्य देवों के प्रति अक्षम्य पाप किये हैं, किन्तु मैं दुःख भी बहुत भोग चुका हूँ। अब तो दुर्बल मैं अधिक ताड़ना नहीं सह सकता, इसलिए हे कामनाओं को पूरा करनेवाले! हे सुखवर्षक! तुम्हीं मुझे सहन करो, क्षमा करो! मेरा यह सच्चा पश्चात्ताप मुझे अब पाप में पड़ने से बचाएगा। इन असह्य पीड़ाओं ने मुझे पाप की दुःखरूपता अनुभव करा दी है। इसलिए मैं अब सहनीय हूँ, तुम्हारी क्षमा का पात्र हूँ। इस समय तो तुम मुझे अपने उस दूसरे करुणहस्त का ही अनुभव कराओ। तुम सच्चे वैद्य हो, तुम ही पूर्ण चिकित्सक हो। आह! तुम्हारा वह सुखदायक हस्त कहाँ है जो औषधमय है, जो आनन्दजनक है? तुम्हारा वह 'मृळयाकु' हस्त कहाँ है जो मेरे इस दैव्य पाप का शमन कर देगा, जो मेरे इस पाप-रोग को दूर कर देगा? मुझे तो अब अपने इसी हस्त का संस्पर्श कराओ। हे वृषभ! मुझे अब क्षमा करो और अपने इसी सुखहस्त का अनुभव कराओ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मजहबी-मतान्ध हत्यारों की जानलेवा साजिश

मिशन रिंकू के बाद अगला निशाना कौन?

दिल्ली में एक बार फिर गंगा-जमुनी तहजीब को छुरा घोप दिया गया। निकिता तोमर की सरेआम हत्या हत्या हो या इससे पहले ख्याला में अंकित सक्सेना को गला रेत दिया जाता है। इसी दिल्ली में फिर बसई दारापुर में बेटी को मजहबी गुंडों से बचाते हुए पिता ध्रुव त्यागी की हत्या कर दी जाती है, कभी दिल्ली के मानसरोवर पार्क में किसी रिया को कोई आदिल सरेआम छुरे घोंप देता है। कभी मजहबी गुंडे घर में घुसकर किसी डॉ नारंग की पीट-पीटकर हत्या कर देते हैं। अब एक बार फिर रिंकू शर्मा की लाठी डंडे से पिटाई कर और चाकू घोंपकर उसकी हत्या कर दी।

एक बार फिर बड़े बड़े-बुद्धिजीवी और मौलाना धर्मनिरपेक्षता और समाज सुधार का लहंगा पहनकर आयेंगे, टीवी स्टूडियो में ठुमके लगायेंगे, कहेंगे कि घटना को सांप्रदायिक रंग देने का प्रयास किया जा रहा है। मजहब को बदनाम किया जा रहा है। हमारा मजहब शांति सिखाता है। ऐसी घटनाओं को मजहबी रंग ना दिया जाये। हम इसकी मजम्मत करते हैं।

ये बात हम इसलिए बता रहे हैं कि ऊपर दी गयी सभी घटनाओं के बाद यही बयान सुनने को मिले थे। लेकिन जैसे ही बसई दारापुर में ध्रुव त्यागी की हत्या के बाद गाजियाबाद में कुछ लोगों ने मजहबी किरायेदारों को किराए पर कमरा नहीं देने का ऐलान किया तो इस एलान में इस्लाम ढूंढ लिया गया। और पुरे देश में खबर चला दी गयी कि हिंदुस्तान में मुसलमानों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। लेकिन मजहब की सनक के कारण एक के बाद एक हुई दिल्ली की हत्याओं में घटनाओं में मजहब फरार कर दिया गया।

मंगोलपुरी इलाके में जिस रिंकू शर्मा की हत्या हुई बताया जा रहा है, शायद पीठ में चाकू घोपना इसी को कहते हैं, जो रिंकू के साथ हुआ। रिंकू शर्मा ने तीन साल पहले हत्यारे इस्लाम की पत्नी को खून देकर उसकी जान बचाई थी। उस वक्त उसकी पत्नी बहुत बीमार थी और इलाज के लिए खून की जरूरत थी। बताया जा रहा है कोरोना के दौरान इस्लाम के भाई की भी मदद की थी। लेकिन इस्लाम ने जो अहसान का बदला चुकाया, आज दुनिया ने उसे बखूबी देख लिया और बता दिया कि कितना भी अहसान कर लो मजहब की सनक दिमाग में इस तरह समाई है कि एहसान की कीमत छुरे से अदा कर देते हैं।

ये मत समझना कि आरोपी कोई नाबालिग है या कम उम्र और कम समझदार है। नहीं, कोई 45 साल का है तो कोई 36 साल का, तो कोई 26 साल का। रिंकू को नही पता था कि जिसकी पत्नी और जिसके भाई की वह मदद कर रहा है एक दिन वही उसे मौत के घाट उतार देगा।

रिंकू के भाई मनु का आरोप है कि कुछ दिन पहले दशहरा पर राम मंदिर पार्क में प्रोग्राम को लेकर आरोपियों का उसके परिवार के सदस्यों के साथ कहासुनी हो गयी थी। उसके बाद से गली में आते-जाते सभी आरोपी जान से मारने की धमकी देते थे। बुधवार रात करीब साढ़े दस बजे चारों आरोपी कुछ अन्य लोगों के साथ रिंकू के घर पर पहुंचे और दशहरा वाले दिन के विवाद का हवाला देते हुए गाली-गलौज करने लगे। रिंकू और मनु ने उनका विरोध किया तो जाहिद ने मनु और रिंकू पर लाठी-डंडे से हमला किया और मेहताब ने रिंकू पर ताबड़-तोड़ चाकू से हमला कर दिया। चाकू रिंकू के रीढ की हड्डी में फंस गया। उसके बाद सभी आरोपी फरार हो गये। मनु व परिवार वाले रिंकू को लेकर संजय गांधी अस्पताल पहुंचे। जहां उपचार के दौरान बृहस्पतिवार की सुबह रिंकू की मौत हो गयी। रिंकू की माँ बता रही है कि इतना खून बह रहा था कि पूरी गली भर गई थी। लेकिन हत्यारे मजहबी जिन्नों ने एक बार नहीं सोचा कि जो खून आज मजहब के नाम पर बहा रहे हैं उसी खून से इस्लाम की पत्नी की सांसे चल रही हैं।

....एक बार फिर बड़े बड़े-बुद्धिजीवी और मौलाना धर्मनिरपेक्षता और समाज सुधार का लहंगा पहनकर आयेंगे, टीवी स्टूडियो में ठुमके लगायेंगे, कहेंगे कि घटना को सांप्रदायिक रंग देने का प्रयास किया जा रहा है। मजहब को बदनाम किया जा रहा है। हमारा मजहब शांति सिखाता है। ऐसी घटनाओं को मजहबी रंग ना दिया जाये। हम इसकी मजम्मत करते हैं।..... ये बात हम इसलिए बता रहे है कि ऊपर दी गयी सभी घटनाओं के बाद यही बयान सुनने को मिले थे। लेकिन जैसे ही बसई दारापुर में ध्रुव त्यागी की हत्या के बाद गाजियाबाद में कुछ लोगों ने मजहबी किरायेदारों को किराए पर कमरा नहीं देने का ऐलान किया तो इस एलान में इस्लाम ढूंढ लिया गया। और पुरे देश में खबर चला दी गयी कि हिंदुस्तान में मुसलमानों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। लेकिन मजहब की सनक के कारण एक के बाद एक हुई दिल्ली की हत्याओं में घटनाओं में मजहब फरार कर दिया गया।.....

बीजेपी नेता कपिल मिश्रा, ऐक्ट्रेस कंगना रनौत समेत कई लोग इस मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। बीजेपी नेता कपिल मिश्रा ने रिंकू शर्मा की हत्या पर कहा, "ये सभी अपराधी पकड़े जाने चाहिए और इनकी सजा केवल फांसी है। दिल्ली पुलिस को चिंता करनी चाहिए कि दिल्ली में इस प्रकार हत्याएं क्यों हो रही हैं। क्या यह केवल एक अलग घटना है, या इसके पीछे बड़ी साजिश है। रिंकू शर्मा के परिवार को न्याय मिलना ही चाहिए, लेकिन इससे बड़ा सवाल है कि आखिर कब तक हम अपने भाइयों और बेटों को खोते रहेंगे।" रिंकू के बाद कौन शिकार होगा? मजहबी आतंकी की सनक पर काबू पाने के लिए इन प्रश्नों का ईमानदारी से उत्तर ढूंढ़ना होगा। वरना कोई नसरुदीनशाह, कोई हामिद अंसारी, कोई आमिर खान देश में मुसलमानों के डरे होने का आरोप लगाकर इस सवालों को अफीम पिलाकर धर्मनिरपेक्षता की कब्र में दफन करते रहेंगे। - ***सम्पादक***

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब) दूरभाष : 91-9814629410

प्रवेश सूचना - सत्र 2021-22

छठी (आयु +9 से 11 वर्ष) एवं सातवीं (आयु +10 से 12 वर्ष) कक्षा में कन्याओं के प्रवेश हेतु।

नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/-) भरकर 31/03/2021 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं अथवा पंजीकृत डाक से भेजें।

प्रवेश परीक्षा : कन्याओं के प्रवेश हेतु लिखित परीक्षा 4/4/2021 रविवार को प्रातः 8 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा । - ***सुरेश मुंजाल, प्रधान***

न्यायालय में महिलाओं पर लागू शरीयत कानून

मुस्लिम महिला क्यों नहीं कर सकती दूसरी शादी ?

.....हमारा संविधान कहता है शादी के समय वर या वधु पहले से शादीशुदा नहीं होने चाहिए। कोई भी महिला और पुरुष दूसरी शादी तभी कर सकते हैं जब उनकी पहली शादी या तो रद्द हो चुकी हो, या पहले पार्टनर की मौत हो चुकी हो, या फिर उनके बीच तलाक हो चुका हो। परन्तु आसमानी किताब सिर्फ पुरुषों को कहती है कि जितनी चाहो बेशुमार बेसहारा औरतों को बीबी ही बना कर रख लो, शरीर में दम हो, पैसे की ताकत हो तो ऊपर वाले को इसमें आपति नहीं है। और यदि कमजोरी हो, तो भी दो-दो, तीन-तीन, चार-चार औरतें शौक के लिए रख लो, यानि चार की ही अंतिम सीमा नहीं है, ज्यादा भी कर सकते हो। समर्थ मुसलमानों को व्यभिचार के लिए बेशुमार औरतें रखने की छूट है और गरीबों के लिए कुछ नहीं है।.....

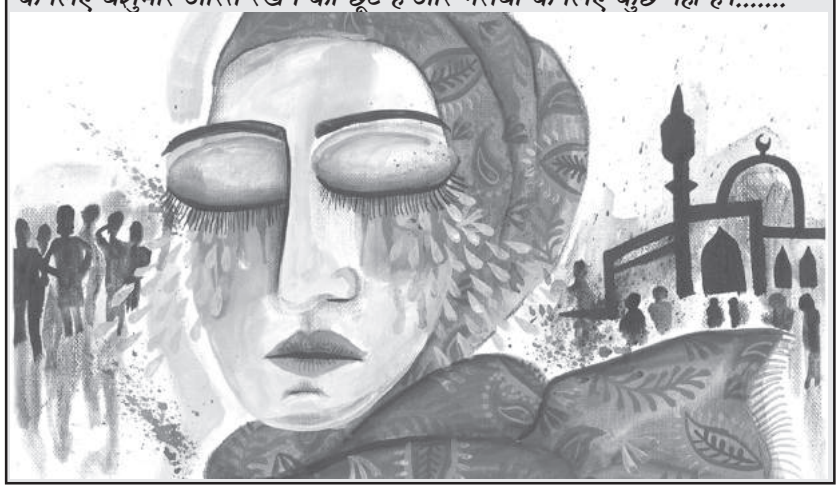

अगर कोई पूछे भारत संविधान से चल रहा है या इस्लामिक शरियत कानून से तो सब एक सुर में कहेंगे कि संविधान से। लेकिन सब जगह ऐसा नहीं है हाल ही में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने साफ कर दिया कि एक मुस्लिम व्यक्ति अपनी पहली पत्नी को तलाक दिए बिना कई शादी कर सकता है, लेकिन एक मुस्लिम महिला पर यह नियम लागू नहीं होगा। अगर किसी मुस्लिम महिला को भी दूसरी शादी करनी हो तो उसे शरीयत कानून के अनुसार पहले पति को तलाक लेना होगा।

हाई कोर्ट की जस्टिस अलका सरीन ने यह फैसला मेवात के एक मुस्लिम प्रेमी जोड़े की सुरक्षा की मांग की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुनाया। प्रेमी जोड़े ने हाई कोर्ट को बताया कि वे दोनों पूर्व में विवाहित हैं। मुस्लिम महिला का आरोप था कि उसकी शादी उसकी इच्छा के खिलाफ की गई थी, इसलिए अब वह अपने प्रेमी से शादी कर रह रही है। लेकिन कोर्ट ने उसे कहा पहले तलाक ले जबकि मुस्लिम प्रेमी को कुछ नहीं कहा क्योंकि शरीयत कानून जो लिखा है हाई कोर्ट ने उसका अनुपालन किया।

हमारा संविधान कहता है शादी के समय वर या वधु पहले से शादीशुदा नहीं होने चाहिए। कोई भी महिला और पुरुष दूसरी शादी तभी कर सकते हैं जब उनकी पहली शादी या तो रद्द हो चुकी हो, या पहले पार्टनर की मौत हो चुकी हो, या फिर उनके बीच तलाक हो चुका हो। परन्तु आसमानी किताब सिर्फ पुरुषों को कहती है कि जितनी चाहो बेशुमार बेसहारा औरतों को बीबी ही बना कर रख लो, शरीर में दम हो, पैसे की ताकत हो तो ऊपर वाले को इसमें आपति नहीं है। और यदि कमजोरी हो, तो भी दो-दो, तीन-तीन, चार-चार औरतें शौक के लिए रख लो, यानि चार की ही अंतिम सीमा नहीं है, ज्यादा भी कर सकते हो। समर्थ मुसलमानों को व्यभिचार के लिए बेशुमार औरतें रखने की छूट है और गरीबों के लिए कुछ नहीं है। विडम्बना यह है कि पूरी आसमानी किताब में यह खुलासा कही भी नहीं किया की मर्दों की तरह एक औरत कितने मर्दों को अपने शौक के लिए पाल सकती है? मर्दों को मरने के बाद 72 हूर मिलना बताया गया है लेकिन महिलायों को कितने फरिस्ते मिलेंगे, शायद इसका हिसाब किताब नहीं दिया गया।

असल में ये कोई व्यंग्य या सिर्फ उदहारण नहीं बल्कि मानवाधिकार आयोग भी कई बार कह चूका है कि जहाँ-जहाँ शरीयत लागू है वहां-वहां महिलाओं का अपना खुद का कोई अस्तित्व ही नहीं है। अगस्त 2005 की बात है सउदी अदालत के एक फैसले ने दुनिया को सोचने पर मजबूर कर दिया था। हुआ यूँ कि 34 साल की एक महिला फातिमा मंसूर का उसके पति से तलाक का आदेश दिया। जबकि दोनों अपने दो बच्चों के संग खुशी से रह रहे थे। फातिमा का निकाह भी उसके पिता की मर्जी से हुआ था। लेकिन पिता की मौत के बाद फातिमा के चचेरे भाई ने पुरुष अभिभावक बनकर इस विवाह का विरोध किया। अदालत ने उसका विरोध स्वीकार किया और फातिमा को उसके चचेरे भाई के साथ रहने का हुक्म सुना दिया। जब फातिमा ने इस फैसले का विरोध किया तो उसे कोड़े मारने के अलावा 4 साल जेल की सजा सुनाई गयी।

ऐसे ही 2007 में एक पिता ने अपना कर्ज माफ कराने के लिए अपनी 7 वर्षीय बेटी का विवाह एक 47 साल के अधेड़ से कर दिया। बालिका ने अदालत में विवाह को निरस्त करने की माँग की, लेकिन सऊदी न्यायालय ने ऐसा निर्णय देने से इंकार कर दिया। ऐसे ही उसी वर्ष एक 75 साल की बुजुर्ग महिला खमिसा मोहम्मद सावादी को 40 और कैद की सजा दी गई, क्योंकि उसने एक व्यक्ति को ब्रेड देने के लिए घर के अंदर आने दिया था।

सिर्फ इतना ही नहीं ये जो मौलाना टीवी पर बैठकर हर रोज शरीयत शरियत करते है इनके लिए कुछ और भी उदहारण हैं। जुलाई 2013 में अल बहाह के किंग फहद अस्पताल ने एक बेहद गंभीर रूप से घायल महिला के हाथ की सर्जरी करने से मना कर दिया क्योंकि उसके साथ कोई पुरुष नहीं था। उसके पति की उसी दुर्घटना में मौत हो गई थी, महिला दर्द से तड़पती रही लेकिन कोई भी उसकी मदद को सामने नहीं आया।

ऐसे ही फरवरी 2014 की घटना है रियाद के विश्वविद्यालय के कैंपस में एक छात्रा अमना बावजीर को दिल का दौरा पड़ा। कैंपस में महिला डॉक्टर नहीं थी, लेकिन विश्वविद्यालय स्टाफ ने पुरुष डॉक्टर को कैंपस के भीतर जाकर छात्रा के इलाज की अनुमति नहीं दी और छात्रा की मौत हो गई।

सिर्फ यही नहीं सऊदी लड़कियों का व्यस्क होने से पहले ही विवाह करा दिया जाता है और उन्हें हिजाब में रहना पड़ता है। लेकिन इसके बाद भी देश में बलात्कार की घटनाओं में भारी बढ़ोतरी हुई है, जिनमें आधे से ज्यादा मामले सामने ही नहीं आते हैं। इसका कारण है वहां प्रचलित शरिया कानून, जिसके अनुसार किसी महिला का बलात्कार होने पर आरोपी को सजा केवल तभी दी जा सकती है, जब वह आरोपी स्वयं अपना अपराध स्वीकार कर ले या फिर महिला चार पुरुष गवाह लेकर आये कि इनके सामने मेरा रेप हुआ है। इस कारण वहां महिलाएं चुपचाप सहन कर जाती हैं। क्योंकि अगर आरोपी उल्टा पीड़ित महिला पर यह आरोप लगा देता है कि बलात्कार करने के लिए उसी ने उकसाया था। तो महिला को व्यभिचार का अपराधी मानकर पूरे समाज के सामने पत्थर मार-मारकर मौत के घाट उतार दिया जाता है। अन्यथा बहुत दया भी की जाए तो 200 कोड़े मारने और 10 साल की जेल की सजा दी जाती है।

जहाँ संविधान महिला और पुरुष को बराबरी का दर्जा देता है वहां आसमानी किताब के अनुसार महिलाओं की बात पर यकीन नही किया जाता, उन्हें पुरुष से कम दिमाग समझा जाता है और चार महिलाओं की गवाही को एक पुरुष की गवाही के बराबर माना जाता है। पुरुष कितनी भी महिला से सम्बन्ध बनाये उसे कुछ नहीं कहा जाता, लेकिन महिला को इसके लिए कड़ी सजा का प्रावधान है। ऐसा ही एक मामला सऊदी में 2009 दुनिया के सामने आया था। इस मामले में एक 23 साल की अविवाहित युवती का सामूहिक रेप किया गया, इसके बाद लड़की गर्भवती हो गई तो उसने अस्पताल में गर्भ गिराने का असफल प्रयास किया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

पं. लेखराम जी की लग्न देखिए

स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने बड़े परिश्रम से अपनी लौह लेखनी से धर्मवीर लेखरामजी का एक प्रेरणाप्रद जीवन-चरित्र लिखा और भी कई जीवन-चरित्र अन्य विद्वानों ने लिखे। इन पंक्तियों के लेखक ने भी 'रक्तसाक्षी पण्डित लेखराम' नाम से एक खोजपूर्ण जीवन-चरित्रों में उनके जीवन की कई महत्त्वपूर्ण घटनाएँ छपने से रह गई हैं। अभी गत वर्ष उनके पावन चरित्र का एक नया पहलू हमारे सामने आया।

पण्डितजी 'आर्यगजट' के सम्पादक थे तो वे बड़ी मार्मिक भाषा में अपनी सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखा करते थे। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के समाचार पाकर बड़ी प्रेरणाप्रद टिप्पणी देकर पाठकों में नवीन उत्साह का संचार कर देते थे।

एक बार पण्डित आर्यमुनिजी पंजाब की उत्तर-पश्चिमी सीमा के किसी दूरस्थ स्थान पर प्रचार करने गये। वहाँ उनके प्रचार से वैदिक धर्म की छाप लोगों पर पड़ी। वहाँ प्रचार करके वे भेरा स्थान पर पधारे। वहाँ भी पण्डित आर्यमुनि की विद्वत्ता ने वैदिक धर्म की महत्ता का सिक्का लोगों के हृदयों पर जमाया। पण्डित लेखरामजी को यह समाचार पहुँचा तो आपने पण्डित आर्यमुनि की विद्वत्ता व कार्य की प्रशंसा करते हुए लिखा कि प्रशंसित पण्डितजी जेहलम आदि से भेरा पहुँचे। मार्ग में कितने ही और ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान व नगर हैं, जहाँ सद्धर्म के प्रकाश की बहुत आवश्यकता है। जिज्ञासु जन पवित्र वेद के सद्ज्ञान से लाभान्वित होना चाहते हैं। यदि हमारे मानीय पण्डितजी वहाँ भी प्रचार करके आते तो कितना अच्छा होता।'

देखा! अपने पूज्य विद्वान् के लिए पण्डित लेखराम के हृदय में कितनी श्रद्धा है औ वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कितनी तड़प है। एक जगह से दूसरी जगह पर जानेवाले प्रत्येक आर्य से धर्म दीवाना लेखराम यह अपेक्षा करता है कि वह मार्ग में सब स्थानों पर धर्म ध्वजा फहराता जाए।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली में स्थान-स्थान पर हो रहें हैं यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वस्त्र वितरण के कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम स्थान स्थान पर यज्ञ, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर स्व. महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 7 फरवरी, 2021 को लायंस क्लब भवन, विवेक विहार, दिल्ली में यज्ञ एवं राशन-वस्त्र वितरण किया गया। किसी को मारकर खाना विकृति है, वो अपना खाए मैं अपना खाऊं ये प्रकृति है, परन्तु दूसरे को भोजन मिले ये सोचकर मैं खाऊं ये भारतीय संस्कृति है। भारत की उसी संस्कृति का निर्वहन करते हुए जरूरतमंदो को राशन व पहनने हेतु वस्त्रादि भेंट किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ देवयज्ञ से किया गया जिसमें लायंस क्लब के सदस्यों ने भाग लिया व आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार यज्ञ के ब्रह्मा बने। आयोजन लायंस क्लब एवं आर्य समाज सूरजमल विहार के सम्मानित अधिकारीगणों की कार्यक्रम में मुख्य भूमिका रही।

दिनांक 10 फरवरी को महिला रैन बसेरा,मल्कागंज, दिल्ली में यज्ञ एवं वस्त्र वितरण आयोजित हुआ।

ईश्वर ने हमें बेशक एक समान ना बनाया हो। किसी को कुछ गुण तो किसी को कुछ क्षमता दी है। लेकिन यज्ञ का अधिकार उसने हम सभी को दिया है और यज्ञ का प्रभाव हर व्यक्ति पर पड़ता है। चाहे उस व्यक्ति को उन मंत्रों का, उन क्रियाओं का अर्थ ना पता हो मगर उससे उसे खुशी की अनुभूति अवश्य होती है।

यह कार्यक्रम मल्कागंज क्षेत्र में रैन बसेरा में रहने वाली मानसिक रूप से विक्षिप्त महिलाओं के साथ किया। ये माता-बहने बेशक मानसिक रूप से कमजोर थी मगर यज्ञ की महिमा को समझते हुए सभी ने मन से यज्ञ किया। यहाँ इनका इलाज किया जाता है। महिलाओ के साथ यहाँ बच्चों की बालवाड़ी भी चलाई जाती है।

वहाँ की डॉक्टर और शिक्षिकाओं का कहना था कि हमने आज से पहले इन लोगों को इतना खुश नहीं देखा क्यूंकि यहाँ इनसे मिलने कोई नहीं आता। उन्होंने आर्य समाज का धन्यवाद कहा और भविष्य में भी यज्ञ आदि कार्यक्रम करने के लिए कहा। यज्ञ के पश्चात् सभी को वस्त्रादि भेंट किये जिन्हे पाकर वो सभी बहुत खुश थे।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है- **आर्य समाज मन्दिर, डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी, निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली-110007**

बाल बोध

विद्यार्थी प्रतिभा विकास के सूत्र

अक्सर अभिभावकों द्वारा सुनने में आता है कि हमारे बच्चे का दिमाग थोड़ा मोटा है, उसमें थोड़ी बुद्धि कम है आदि, किसी भी विद्यार्थी का दिमाग मोटा-पतला नहीं होता, पर कुछ बनने की और आगे बढ़ने की लगन मन में होनी ही चाहिए। लगन से व्यक्ति गगन तक पहुंच जाता है। अगर विद्यार्थी परिश्रमी है और पुरुषार्थी है तो उसकी बुद्धि सदैव प्रखर रहती है। जो भावनात्मक प्रतिभा अन्दर है, उसे विकसित कैसे करें? पहली बात यह है कि सामने चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो, जल्दी घबराएं नहीं, बल्कि हिम्मत रखकर चलें। ऐसे विचारों को मन में भी न आने दें कि अब हम कुछ नहीं कर सकते हैं, हमारे पास तो कुछ भी नहीं है और हम तो बहुत गरीब हैं। हमारा तो कोई साथ देने वाला भी नहीं है। हमारे मां-बाप तो किसी मिनिस्टर के रिश्तेदार नहीं हैं। हम लोग तो वैसे भी पीछे हैं। पैसे की बहुत कमी है। हमारे पिता का कोई भी पद नहीं है। अगर आप में कुछ बनने की हिम्मत है तो आप अपनी लगन के माध्यम से लगातार आगे बढ़ते जाएंगे, केवल अपना धैर्य, हिम्मत, साहस बनाए रखें, यहां पर प्रस्तुत हैं विद्यार्थी प्रतिभा विकास के कुछ सूत्र - सम्पादक

कोई भी व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न नहीं होता। हर व्यक्ति के अन्दर कोई न कोई प्रतिभा अवश्य होती है। इंसान में प्रतिभा (टैलेन्ट) केवल 2 प्रतिशत होता है। 98 प्रतिशत तो उसका पुरुषार्थ होता है। ज्यादा से ज्यादा औसत 3 प्रतिशत हो सकता है, लेकिन 97 या 98 प्रतिशत पुरुषार्थ ही आपकी प्रतिभा को विकसित करता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि अपनी प्रतिभा को विकसित करने का तरीका क्या है? कई लोग सोचते हैं कि स्मृति बढ़ाने की चीजें खानी चाहिए। जिससे स्मरणशक्ति अच्छी हो जाए। लेकिन कभी भी अक्ल की दवाई बाजार में नहीं मिलती है। मेमोरी, याददाश्त बढ़ाने की दवाईयां शुरू हुई; लेकिन वे सब फेल हैं। बहुत सारे टैबलेट्स आदि बाजार में आनी शुरू हुई हैं पर वे कोई खास चीज नहीं हैं।

शास्त्रों में कहा गया है कि "अश्मा भव, परशुर्भव" तू पत्थर बन। अर्थात् तुम पत्थर जैसे कठोर शरीर वाले बनो। "परशुर्भव" परशु कहते हैं फरसे को या कुल्हाड़े को। अर्थात् दिमाग से तू फरसा जैसा तीक्ष्ण हो जा। फरसे का जितना प्रयोग करते जाएं, उतना ही वह तीखा, तेज होता जाता है और अगर उसका प्रयोग न करें तो उसमें जंग लगना शुरू हो जाता है। वस्तुत: मनुष्य की बुद्धि भी ऐसी है, दिमाग भी उसका ऐसा ही है। उनका प्रयोग जितना ज्यादा करेंगे; उतने ही प्रखर होते चले जाएंगे, अगर इनका प्रयोग नहीं करें तो बुद्धि कुन्द होनी शुरू हो जाएगी, उसमें जंग लगना शुरू हो जाएगा। इसलिए सीखने की आदत जरूर बनाइए। सीखने के लिए एक ट्रिक जरूर इस्तेमाल करें। जो विद्यार्थी कम्पटीशन में बैठते हैं; उन्हें यह जरूर ध्यान देना चाहिए। एक जगह पर लगातार बैठकर दो घण्टे पढ़िए और उसके बाद दस मिनट का थोड़ा-सा ब्रेक दें, दस मिनट के ब्रेक के बाद आप अपनी कुर्सी से उठकर अपने मुंह पर पानी के छींटें लगाइए। इस तरह से तीन बार कीजिए। अच्छी तरह से अपने आपको फ्रैश करने के बाद, फिर एक या आधा गिलास पानी पीकर, थोड़ी देर ताजी हवा में जाकर टहलिए।

विद्यार्थी बदलाव लाने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़कर 10 मिनट के लिए टी.वी. के सामने बैठ जाते हैं। वे कहते हैं कि मूड चेंज करने के लिए यह जरूरी है; लेकिन उन्हें यह पता नहीं है कि किरणों का जो विकरण टी.वी. के माध्यम से निकलता है; वह मस्तिष्क पर और ज्यादा दबाव डालता है। विद्यार्थियों को जो ताजगी लगती है; वह उन्हें म्यूजिक के कारण लगती है। इसके लिए आप कोई म्यूजिक टेपरिकार्ड, रेडियो या स्टीरियो पर चला लें; लेकिन टहलते हुए। इससे भी बढ़िया तरीका यह है कि आप गुनगुनाते हुए केवल दस मिनट टहल लीजिए। फिर तीन-चार मिनट के लिए शवासन में लेट जाएं। लम्बे-गहरे श्वास लें, क्योंकि जितनी ज्यादा आपके ब्रेन को आक्सीजन मिलेगी उतना ही दिमाग बढ़िया ढंग से काम करेगा। दस मिनट का जो ब्रेक है वह आपके मस्तिष्क को ज्यादा ग्रहण करने की शक्ति देता है।

- शेष अगले अंक में

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्र प्रेमी, धर्म रक्षक, संस्कारवान .....

लेकिन ये दु:ख केवल इस परिवार का ही नहीं हम सब इसमें सहभागी हैं। पूरा देश और हर परिवार इसमें बराबर का हिस्सेदार है। लेकिन मैं आज ये पूछना चाहता हूं कि इसका जिम्मेदार कौन है? उन्होंने दिल्ली के खयाला, विकासपुरी और बसई दारापुर की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा हुआ अगर उस समय प्रशासन जाग जाता तो ऐसी घटना न घटती। विनय आर्य जी ने आगे कहा कि ये औरंगजेब की दिल्ली या देश नहीं है। औरंगजेब ने अपने पिता को मारकर राज्य हड़पा था। यह तो श्रीराम का देश है और राम ने अपने भाई के लिए, अपने पिता की आज्ञा के लिए 14 वर्षों का वनवास ग्रहण किया था। हमें राम राज्य चाहिए। हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से प्रेरणा लें और राम बनने का संकल्प लें। केवल राम राज्य का नारा लगाने से राम राज्य नहीं आयेगा। राम केवल त्याग की मूर्ति ही नहीं थे। उन्होंने दुष्टों का दलन भी किया था। लंका में आग लगवाई और रावण को मारा था। हमें भी अगर कानून अपना काम सही से नहीं करती है और बार-बार ऐसी दुखद घटनाएं घटती हैं तो फिर हमें भी राम बनकर आतातायी रावण को मारना पड़ेगा। श्री विनय आर्य जी ने पुन: रिंकू शर्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की और पूरे परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हुए अपनी वाणी को विराम दिया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

बाल वीर हकीकत राय के बलिदान ....

कहानी बन गई कि इसका जितना वर्णन करें कम ही लगता है। हाकिम अदीना बेग को यह भलिभांति समझ आ गया था कि यह बच्चों का झगड़ा है लेकिन मुस्लिमों ने हकीकत राय को मृत्युदंड दिए जाने की मांग कर डाली। इसके विपरीत वीर हकीकत राय के माता-पिता ने दया की याचना भी की लेकिन मुस्लिमों की पुरजोर अन्यायकारी मांग के आगे उनकी एक न चली और हाकिम अदीना बेग ने कहा कि अगर हकीकत राय इस्लाम कुबूल कर ले तो इसकी जान बख्स दी जाएगी। लेकिन इस अन्यायकारी निर्णय को वीर हकीकत राय ने अस्वीकार कर दिया और मुसलमान मौलवी-काजी सब उन्हें मारने के लिए तैयार हो गए। स्थिति को बिगडते देख हकीकत के माता-पिता ने लाहौर के नवाब जकरिया खान के सामने फरियाद की। हकीकत राय जब लाहौर पहुंचे तो स्यालकोट के मुसलमान मौलवी-काजी भी वहीं पहुंच गए।

हकीकत राय और मुस्लिमों की सारी बातें लाहौर के सुबेदार ने ध्यान से सुनी और हकीकत को कहा कि तुम मुसलमान बन जाओ, मैं अपनी सुंदर बेटी का विवाह तुम्हारे साथ कर दूंगा, सारा धन-दौलत तुम्हारा होगा, जीवनभर तुम सुख से रहोगे। एक तरफ सारा मुस्लिम समुदाय खिलाफ था, मृत्यु सामने थी, भयंकर भय का वातावरण था, दूसरी तरफ एक बहुत बड़ा प्रलोभन भी उसे ललचाने के लिए तैयार था, धन-संपत्ति, वैभव साधन-सुविधाओं की भरमार, सुंदर पत्नी, ऐशो आराम का जीवन बिन मांगे मिल रहा था। किंतु आत्मज्ञानी बालक का उत्तर असाधारण था, लोभ-लालच के बंधनों को तोड़कर, धन वैभव को ठोकर मारकर वीर हकीकत राय ने कुछ प्रश्न ऐसे किए कि सबके सिर झुक गए। हकीकत राय ने कहा कि क्या मुसलमान बनने के बाद मैं सदा जीवित रहूंगा या आप भी जीवित रहेंगे? संसार में जो आता है उसे एक न एक दिन जाना ही पड़ता है, यह तो सृष्टि का अटल सिद्धांत है। फिर मैं क्यों अपना धर्म छोड़ूं, इस्लाम कुबूल क्यों करूं? जिस धर्म के नाम पर आंडबर को मानने वाले लोग हमारी दैवीय संस्कृति का अपमान करते हैं, ऐसे मत को मैं क्यों मानूं?

धुन के धनी, अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति वीर हकीकत राय को माता-पिता ने भी सलाह दी कि बेटा तुम मुसलमान ही बन जाओ, कम से कम तुम जीवित तो रहोगे। मां की ममता फूट-फूट कर रोई, पिता की सहन शक्ति भी जवाब दे गई, दोनों ने खूब समझाया लेकिन संकल्प के धनी निष्ठावान हकीकत राय ने कहा कि आपके द्वारा दी गई शिक्षा ही मेरी शक्ति है, आपने ही तो बताया था कि शरीर मरता है, आत्मा नहीं, आत्मा तो अजर-अमर है, मेरा शरीर ही तो मरेगा आत्मा नहीं, इसलिए मुझे आशीष दो कि मैं अपने धर्म की शान के लिए अडिग रह सकूं, अपने प्राणों को न्यौछावर कर सकूं। वीरता की महान प्रेरणा के स्रोत हकीकत के ये मार्मिक प्रेरक वचन सुनकर मां-बाप की आंखों से आंसूओं की धाराएं बह निकलीं, लेकिन वे हकीकत को अपने संकल्प से नहीं डिगा सकी।

सन् 1734 में बसंत पंचमी का दिन था, मतांध नवाब ने मुस्लिमों की आवाज को ही अपने न्याय का हथियार बनाकर मौत का हुक्म सुना दिया और इस तरह एक असाधारण प्रतिभा के धनी बालवीर हकीकत राय अपने धर्म-संस्कृति और संस्कारों का संरक्षण करते हुए बलिदान हो गए। बालवीर हकीकत राय के महान प्रेरक बलिदान को शत-शत नमन।

धन्य-धन्य तुम वीर हकीकत, धन्य तुम्हारा था बलिदान

धन्य-धन्य तुम वीर हकीकत, धन्य तुम्हारा था बलिदान।
प्राण गवाये धर्म न छोड़ा, रख ली आर्य जाति की शान।।

~~शस्त्र न कोई इस दुनिया में, जो आत्मा को काट सके।~~
यही हकीकत जिसे जान कर, तुमने दे दी अपनी जान।

दिए प्रलोभन थे यवनों ने, सांसारिक सुख संपत्ति के।
किन्तु डिगे नहीं धर्म मार्ग से, करते हम तेरा गुण गान।

तुम बालक थे नहीं दुनिया को, कुछ भी तुमने देखा था।
मात किया पर ज्ञानी जनों को, पा आत्मा का सच्चा ज्ञान।

"लो काटो अपनी असिधारा, से तुम मेरी नश्वर देह।
पर न हकीकत काट सको तुम" इन शब्दों में कैसी शान।

धर्म वेदी पर बलि दे करके, तुम न मरे पर अमर हुए।
कितनी ही सदियां बीतीं पर, तुमको याद करे मतिमान।।

वह वसंत उत्सव था जिसके, मद से मस्त हुई दुनिया।
पर तुमने जीवन वसंत का, अंत किया रखने को आन।

मात पिता गुरु बंधू सभी थे, तुम्हें डिगाने खड़े हुए।
पर न डिगे तुम सत्य मार्ग से, क्यूँ न करे हम तेरा मान।।

निर्भयता का पाठ पढ़ाया, तुमने डरती दुनिया को।
दृढ़ता का धर्म अनुराग था, रखा था आदर्श महान।

यही कामना तुमसे सारे, धर्म वीर जग में जनमें।
तुम से वीर सुतों को पाकर, भारत माता को अभिमान।।

- धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड

स्वास्थ्य रक्षा

प्रकृति का स्वास्थ्य सन्देश

प्रकृति और मानवदेह का जन्मजात संबन्ध है। मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेता है और उसी के विशाल प्रांगण में क्रीड़ा करते-करते एक दिन परमात्मा की गोद में चला जाता है। प्रकृति का यह विधान अटल है कि जो जीव उसकी उपेक्षा करता है वह उसको दण्डित अवश्य करती है। प्रकृति रूपी अमृत प्रसाद को ग्रहण करने के लिए जीव को सजग एवं सावधान जरूर रहना पड़ेगा। क्योंकि स्वस्थ जीवन अथवा किसी भी प्रकार की पीड़ा के बिना औषध ग्रहण किए प्रसन्नचित, स्वस्थ रहना ही कुशलता है।

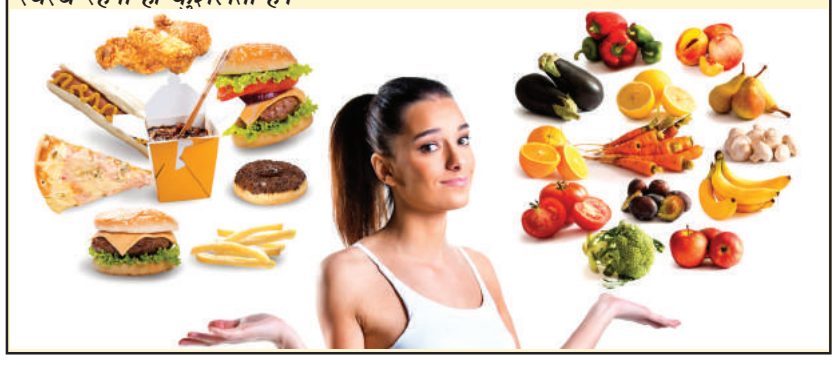

इस अखण्ड ब्रह्माण्ड में तीन तत्त्व ही प्रमुख हैं-ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर सम्पूर्ण जगत का नियन्ता, जीव भोक्ता तथा प्रकृति भोग्य पदार्थ है। ईश्वर सृष्टि के कण-कण में समाया हुआ है। सम्पूर्ण प्रकृति ईश्वर का गुणगान करती है और जीवमात्र का पालन-पोषण करती है। मानव जीवन की यात्रा सुखद, सुगम हो इसके लिए उसे प्रकृति की अवेहलना नहीं करनी चाहिए।

प्रकृति और मानवदेह का जन्मजात संबन्ध है। मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेता है और उसी के विशाल प्रांगण में क्रीड़ा करते-करते एक दिन परमात्मा की गोद में चला जाता है। प्रकृति का यह विधान अटल है कि जो जीव उसकी उपेक्षा करता है वह उसको दण्डित अवश्य करती है। प्रकृति रूपी अमृत प्रसाद को ग्रहण करने के लिए जीव को सजग एवं सावधान जरूर रहना पड़ेगा। क्योंकि स्वस्थ जीवन अथवा किसी भी प्रकार की पीड़ा के बिना औषध ग्रहण किए प्रसन्नचित, स्वस्थ रहना ही कुशलता है।

आश्चर्यजनक बात यह है कि सब कुछ जानते हुए भी लोग शरीर का ध्यान नहीं रखते। ईश्वर ने मानव को देह-रूपी अनमोल तथा अनुपम यन्त्र दिया है। किन्तु इसके बारे में हम सदैव लापरवाही बरतते हैं। शरीर रूपी यन्त्र को प्रकृति के संसर्ग की कितनी आवश्यकता है यह जानना अति आवश्यक है। आज का मानव उचित आहर-विहार के अभाव में रुग्ण होकर स्वास्थ्य की अवहेलना करते हुए अल्पायु में ही संसार को त्यागकर चल देता है अथवा यूं भी कह सकते हैं कि उसकी असावधानी को प्रकृति बर्दाश्त नहीं करती और दण्डित कर देती है।

रोगों का मूल कारण क्या है? अनुचित आहार, स्वादु भोजन, लोभ से अधिक खाना, बिना समय ग्रहण करना, देर रात्रि में खाना, बेमेल खाना, बिना चबाए खाना, भोजन के साथ-साथ ज्यादा पानी पीना, भोजन के बाद शारीरिक मेहनत करना इत्यादि, यकृत की खराबी, पुराना ज्वर, नींद की कमी होना, धूम्रपान, गुटका, शराब, नशीले पदार्थो का सेवन करना, मैदे से बनी डिब्बा बंद चीजों का सेवन, गरिष्ट तली हुई चीजों का प्रयोग, चाय-काफी का अधिक सेवन आदि उपर्युक्त कारणों से व्यक्ति अस्वस्थ रहता है। केवल डॉक्टर या वैद्य हकीमों की दवाइयों से सन्तोष करके स्वयं को स्वस्थ मान लेना अनुचित है। शरीर में चाहे जितनी भी खराबी हो केवल दवाइयों के अन्धकार में ही हम भ्रमण करते हैं और जब रोग बढ़ जाता है तब मृत्युवश होकर ईश्वर पर छोड़ देते हैं। किसी भी रोग से पूर्ण रूपेण परिचित होने के लिए उसका स्वभाव और कारण से परिचित होना अति आवश्यक है।

इंसान को पशु-पक्षियों के सहज जीवन से बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। वे बीमार होने पर प्रकृति का सहारा लेकर स्वास्थ्य लाभ करते हैं। लेकिन संसार का सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान प्राणी मानव विज्ञान के इस आधुनिक युग में अपनी प्राचीन शुद्ध-सात्त्विक ईश्वर द्वारा निर्देशित दिनचर्या को न अपनाकर रोगों को बढ़ा रहा है और बढ़ते हुए रोग समाज के लिए चिन्ता जनक हैं।

यदि मनुष्य अपने विचारों, इच्छाओं अथवा कार्यों से प्रकृति के सामंजस्य को बिगाड़ता है तो उसके पुनः परिणाम का दायित्व भी उसी का होता है। प्रकृति उपासक को पुरस्कृत करती है और अवहेलना करने वाले को दण्ड देती है। नियम के अनुसार हम स्वयं ही अपने आपको पुरस्कृत या दण्डित करते हैं।

- शेष अगले अंक में

ओ३म् उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ओ३म्
के तत्वावधान में
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयागराज
के संयोजकत्व में आयोजित
वैदिक धर्म प्रचार शिविर माघमेला 2021
दिनांक 28 जनवरी से 28 फरवरी, 2021
सेक्टर 4, काली सड़क पान्टून पुल न. 3 के उस पार पहला शिविर

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

..... Lekh Ram was born in 1858 at Syadpur. All were pleased at his birth, but none was happier than his father, Tara Singh. Even as a boy Lekh Ram appeared to be very intelligent. His parents had high hopes about him. When he was five years old he was sent to the village school. There he was taught Urdu and Persian. At that time Urdu and Persian were the languages ofthe court. Lekh Ram's parents were anxious for him to get a Government position. This was but natural, for in those days even a petty Government position was thought to be more important than any other. .....

पं. लेखराम आर्य मुसाफिर
१८५८-१८९७

Most people are familiar with the name of Jhelum. It is one of the districts of that part of Punjab which is now is Pakistan. In this district there is a tehsil named Chakwal. Eight miles to the east of it is a village called Syadpur. It is situated on a small hill. It is a beautiful place with a fme climate.

On three sides of it flow streams. Their waters swell in the rainy season, but they dry up in winter. One of these streams is known as the Kashi. The other is known as the Saraswati.

During the days of Sikh rule Sayadpur was an important town. It had a fort which a Sikh chief had built. It is said that is was swept away by floods in the rivers. The ruins of this fort can be seen today.

In this town lived a man named Mehta Narain Singh. He did not at first belong to this place. He really belonged to a place in the Rawalpindi district.

Mehta Narain Singh had two sons-Tara Singh and Ganda Ram. Ganda Ram was employed in the Police at Peshawar. After retiring he settled at Rawalpindi. In his old age, he was active and strong.

Tara Singh had three sons and one daughter. His eldest son was named Lekh Ram. They were all Brahmins of a very high caste. But they were Brahmins only in name, for Mehta Narain Singh had been a mighty warrior. He was a cavalry officer under a Sikh Chieftain, and was well known for his strength and bravery. For this reason his master was very pleased with him.

Once Narain Singh went with his master to fight against the Pathans. Unluckily, on the battle field he was hit with a bullet. But such was his courage and bravery that he did not show the least sign of fear. He did not even utter a word to show his pain when the wound healed, his chieftain presented him with a pair of big gold bracelets. After this he took part in many more battles.

Sham Singh was the younger brother ofNarain Singh. He practised celibacy to the last day of his life. When the Sikh rule came to an end, he became a recluse. Then he set out on his travels. Every one who saw him admired him for his simplicity and nobility of character. He died when Lekh Ram was about thirteen years old. It is no wonder that the boy was much influenced by his character.

Lekh Ram was born in 1858 at Syadpur. All were pleased at his birth, but none was happier than his father, Tara Singh. Even as a boy Lekh Ram appeared to be very intelligent. His parents had high hopes about him.

When he was five years old he was sent to the village school. There he was taught Urdu and Persian. At that time Urdu and Persian were the languages ofthe court. Lekh Ram's parents were anxious for him to get a Government position. This was but natural, for in those days even a petty Government position was thought to be more important than any other.

Lekh Ram was neve rtaught Hindi and Sanskrit while he was a boy. Nevertheless he was religious by nature. One of his aunts used to observe a fast on every *ekadshi* day. Lekh Ram also began to do the same. His elders told him that he was too young to do so. But he did not listen to them. He kept up this practice for a long time. This shows his will power even as a boy.

He had not been at school very long when the Inspector came to visit it. He examined all the students, but Lekh Ram seemed to him to be the best. He was so struck with his intelligence that he gave him a special prize.

When he was eleven years old Lekh Ram left for Peshawar. He stayed there with his uncle who was employed in the Police. This gentleman made some arrangements for his education. He sent him to some teachers to learn Urdu and Persian, but he did not learn much from them. Instead of listening patiently to what they said, he would tire them with questions of his own. He did not, therefore, get on well with these.

However, he stayed on with his uncletill he was fourteen years old. Then he-went back to his village. There he joined the village school again. The Headmaster of the school was, at that time, Munshi Tulsi Das.

Lekh Ram read a large number ofbooks with him. But he learnt far more from the teacher than from the books. For Munshi Tulsi Das was a kindhearted gentleman who was always ready to help ;thers. He was an entirely unselfish and unworldly person. He spent whatever he earned on the poor. He took great interest in Lekh Ram, for he felt that he was not l ike other boys. In the first place he was more intelligent than his class-fellows. He had also greater strength of character than they.

He was also deeply religious. While he was at Peshawar he came under the influence of an old Sikh gentleman, who taught him to read Gurmukhi. He also made him read the Gita in Gurrnukhi. Lekh Ram would get up very early every day. First he would take his bath. Then he would read the Gita. He also learnt from this gentleman how to control his breath. After some practice he became very good at it.

But Lekh Ram was too independent to satisfy his teacher. The latter, therefore, often wrote to his uncle about him. In one of his letters he wrote, "Lekh Ram can speak fluently. He can talk well. He reads a good deal. But he does not listen to others.Ifhe had had a little more tact, he would have been the best of my students."

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — नामनिवासस्थान प्रकरणम्

संस्कृत	हिन्दी
52. कस्मादधीषे ?	किससे पढ़ता है ?
53. यज्ञदत्तादध्यापकात्।	यज्ञदत्त अध्यापक से।
54. इमे कुतोऽभ्यस्यन्ति ?	ये किससे पढ़ते हैं ?
55. विष्णुमित्रात्।	विष्णुमित्र से।
56. तवाध्ययने कियन्तः संवत्सरा व्यतीताः ?	तुम को पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते ?
57. पञ्च।	पांच।
58. भवान् कति वार्षिकः ?	आप कितने वर्ष के हुए ?
59. त्रयोदशवार्षिकः।	तेरह वर्ष का।
60. त्वया पठनारम्भः कदा कृतः ?	तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया था ?
61. यदाऽहमष्टवार्षिकोऽभूवम्।	जब मैं आठ वर्ष का हुआ था।
62. तव मातापितरौ जीवतो न वा ?	तेरे माता-पिता जीवित हैं या नहीं ?
63. विद्येते।	जीवित हैं।
64. तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च ?	तेरे कितने भाई और बहिन हैं ?
65. त्रयो भ्रातरश्चैका भगिन्यस्ति।	तीन भाई और एक बहिन है।
66. ते ा त्वं ज्येष्ठस्ते, सा वा ?	उनमें तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा बहिन ?
67. अहमेवाग्रजोऽस्मि।	मैं ही सबसे पहिले जन्मा हूं।
68. तव पितरौ विद्वांसौ न वा ?	तेरे माता-पिता विद्या पढ़े हैं वा नहीं ?
69. महाविद्वांसौ स्तः।	बड़े विद्वान् हैं।
70. तर्हि त्वया पित्रोः सकाशात्कुतो न विद्या गृहीता ?	तो तूने माता-पिता से विद्या ग्रहण क्यों नहीं की ?
71. अष्टमवर्षपूर्यन्तं कृता।	आठवें वर्ष पर्यन्त की थी।
72. अत ऊर्ध्वं कुतो न कृता ?	इससे आगे क्यों न की ?
73. मातृमान् पितृमानाचार्य्यवान् पुरुषो वेदेति शास्त्रविधेः।	माता-पिता से आठवें वर्ष पर्यन्त, इसके आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र में विधान है, इस से।
74. अन्यच्च, गृहकार्यबाहुल्येन निरन्तरमध्ययनमेव न जायतेऽतः।	और भी, घर में बहुत काम करने से निरन्तर पढ़ना नहीं हो सकता इसलिए भी।
75. अतः परं कियद्वर्षपर्यन्तमध्येष्यसे ?	इसके आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा ?
76. पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि।	पैंतीस वर्ष तक।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें

https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

भय से मुकाबला (fight or flight)

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....किसी पदार्थ या परिस्थिति के प्रति स्थायी भय को फोबिया कहते हैं। कोई दुर्घटना हो जाये तो बालक के मन पर उसका गहरा संस्कार पड़ जाता है और वह आजीवन उस परिस्थिति के प्रति संवेदनशील हो जाता है। एक माता अपनी छोटी लड़की को साथ लेकर पिकनिक के लिये गई। वहाँ एक छोटा सा झरना था। महिला अपनी सहेलियों के संग दूसरे कार्यों में लग गई और वह बलिका झरने के पानी में फँस गई। पानी थोड़ा था इसलिये वह डूबने से बच गई परन्तु बड़ी होने पर भी जब वह नल से भी गिरते हुये जल को देखती तो भय से कांपने लगती।.....

भय मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों में से एक है। भय से मनुष्य को आत्मरक्षा की प्रेरणा मिलती है और वह सीधे रास्ते पर सतर्क होकर चलने का प्रयत्न करता है। परन्तु भय जब अत्यधिक बढ़ जाये तो मन स्तब्ध या किंकृर्त्तव्य विमूढ़ हो जाता है। भय मनुष्य की कर्म शक्ति का सबसे बड़ा शत्रु है।

भय के कारण- 'वितीयाद् वै भयं भवति' भय दूसरे से होता है। बचपन में किसी दुर्घटना के होने, माता-पिता के डराने और पिता द्वारा प्रताड़ित किये जाने पर बालक के अवचेतन मन पर अमिट छाप पड़ जाती है और वह दब्बू स्वभाव का बन जाता है। इन पर क्रमश: विचार करना उपयुक्त रहेगा।

1. फोबिया (काल्पनिक भय)

किसी पदार्थ या परिस्थिति के प्रति स्थायी भय को फोबिया कहते हैं। कोई दुर्घटना हो जाये तो बालक के मन पर उसका गहरा संस्कार पड़ जाता है और वह आजीवन उस परिस्थिति के प्रति संवेदनशील हो जाता है। एक माता अपनी छोटी लड़की को साथ लेकर पिकनिक के लिये गई। वहाँ एक छोटा सा झरना था। महिला अपनी सहेलियों के संग दूसरे कार्यों में लग गई और वह बलिका झरने के पानी में फँस गई। पानी थोड़ा था इसलिये वह डूबने से बच गई परन्तु बड़ी होने पर भी जब वह नल से भी गिरते हुये जल को देखती तो भय से कांपने लगती।

2. माता-पिता द्वारा डराना

बच्चे जब कोई शरारत या जिद करते हैं या कहना नहीं मानते तो मातायें उन्हें कहती हैं चुप रहो, सो जाओ, दूध पीलो नहीं तो हौआ तुम्हें काट खायेगा। इसी भाँति के बालक को कहती हैं उस स्थान पर नहीं जाना। वहाँ भूत-प्रेत रहते हैं वे तुम्हें मार डालेंगे। इसी भाँति कोई खेल खेलने पर भी चोट लगने या अंग भंग होने का भय दिखाया जाता है। ऐसे अनेक कारण हैं जिनसे बालक के सुकोमल मन पर भय का भूत सवार हो जाता है और उसका साहस, कार्यशक्ति तथा रचनात्मक प्रवृत्ति कुण्ठित हो जाती हैं।

इसी भाँति कोई गलती हो जाने पर पिता द्वारा की गई प्रताड़ना को भी बालक भूल नहीं पाता और बड़ा होने पर भी वह पिता से खुलकर बातचीत नहीं कर पाता।

3. अनहोनी से भय

जब किसी का बालक या बालिका विद्यालय से कुछ विलम्ब से आता है तो मातायें किसी अनहोनी आशंका करने लगती हैं। कुछ व्यक्ति वायुयान या समुद्री जहाज में बैठते समय भयभीत हो जाते हैं कि यदि कोई दुर्घटना हो गई तो हमारी खैर नहीं। वे समाचार पत्रों में सर्वप्रथम अपनी राशि का फलादेश देखते हैं कि आज मेरे साथ क्या होने वाला है। एक समाचार पत्र के सम्पादक ने बतलाया कि कई बार जब ज्योतिषि जी का राशि फलादेश हमें नहीं मिल पाता तो हम उन्हीं राशियों के फलादेश को ऊपर नीचे करके छाप देते हैं। किसी के मार्ग को बिल्ली काट गई तो किसी दुर्घटना की कल्पना करके मन सिहर उठता है।

4. परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का भय

विद्यार्थी जीवन में परीक्षा सबको भयभीत करती है। किसी को कम अंक आने का भय, किसी को अनुत्तीर्ण होने का भय और किसी को अगली कक्षा में प्रवेश न मिलने का भय बना रहता है। इस भय के कारण अनेक बार बुद्धिमान् बालक भी पिछड़ जाते हैं। - *शेष अगले अंक में*

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 10,11,12 मार्च 2021 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्यसमाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। अपने आने की पूर्व सूचना डाक अथवा व्हाट्सअप नं. 9560688950 सन्देश द्वारा सूचना भेजें।

- अजय सहगल, मन्त्री

शोक समाचार

श्री आर्य बालमुकुन्द बरनवाल का निधन

आर्य समाज भोजूबीर वाराणसी (उ.प्र.)के पूर्व वरिष्ठ उप-प्रधान श्री आर्य बालमुकुंद बरनवाल जी का 102 वर्ष की अवस्था में दिनांक 8 फरवरी, 2021 को उनके आवास पर निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री महेश भार्गव जी को पितृशोक

महर्षि दयानंद जी के अनन्य भक्त, धार्मिक, सरल, यज्ञ प्रेमी, आर्य समाज नगर शाहदरा, दिल्ली के प्रतिष्ठित सदस्य एवं श्री महेश भार्गव जी के पूज्य पिता श्री रघुवीर भार्गव जी का दिनांक 8 फरवरी, 2021 आयु 83 वर्ष का निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ रामघाट, ज्वाला नगर शाहदरा में किया गया।

पंडित शान्ति प्रकाश जी का निधन

वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्थान के संरक्षक एवं आर्यसमाज विभव नगर आगरा के पूर्व प्रधान एवं पुरोहित पंडित शान्ति प्रकाश जी का दिनांक 11 फरवरी, 2021 को प्रात: 3:30 बजे लगभग 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार मोक्षधाम शमशान घाट ताजगंज, आगरा में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 14 फरवरी, 2021 को आर्य समाज विभव नगर, आगरा में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पृष्ठ 3 का शेष

मुस्लिम महिला क्यों नहीं ...

लड़की को व्यभिचार करने के अपराध में 100 कोड़े मारने और 1 वर्ष की कैद की सजा दी गई। सिर्फ यही नहीं, साल 2004 में सऊदी की प्रसिद्ध टीवी एंकर रानिया अल-बज को अपने पति से बगैर पूछे रिंग हो रहे उसके फोन उठाने का खामियाजा बुरी तरह मार खाकर घायल होकर भुगतना पड़ा।

ऐसे एक नहीं हजारों उदहारण शरियत कानून लागू देशों के हैं और बुर्के में बंद हर एक महिला की यही तस्वीर है। क्योंकि बुरका उठाकर रोना भी शरियत कानून का उलंघन है। सवाल सिर्फ शरियत का नहीं है। सवाल हमारे उन जजों से भी है जो संविधान की शपथ लेकर बैठे हैं और फैंसले शरियत के अनुसार सुना रहे हैं, सवाल विश्व भर की उन नामचीन हस्तियों से भी है जो भारत के किसान आन्दोलन में ज्ञान पेल रहे हैं, लेकिन ऐसे अत्याचारों पर खामोश बैठे हैं। सवाल रेयाना ग्रेटा और मियां खलीफा से भी है जो महिला होते हुए भी कभी इस्लामिक देशों महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचारों पर एक आवाज नहीं उठाती। जबकि मानवधिकार संगठन मानते हैं कि यदि महिलाओं के लिए इस धरती पर नरक या दोखज कोई जगह है तो वो वहां है जहाँ ऐसे फैसले लिए जाते हैं। अगर इसी शरियत के लिए लड़ रहे आतंकवादियों और जेहादियों के मंसूबे कामयाब होते हैं तो दुनिया का एक बड़ा हिस्सा औरतों के लिए जहन्नुम बन जाएगा लेकिन ऐसे सवालों को साम्प्रदायिक कहकर ढक दिया जाता है।

- राजीव चौधरी

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 फरवरी, 2021 से रविवार 21 फरवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18-19/02/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 फरवरी, 2021

पुलवामा में आतंकी हमले की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर शहीद हुए 40 जवानों को समर्पित

यज्ञ एवं एक देशभक्ति की शाम भारत माता के नाम कार्यक्रम सम्पन्न

प्रतिष्ठा में,

सर-ऐ-मैदान बहादुरी की निशानी दे दी।
खून से लिखी हुई अपनी कहानी दे दी।
मादर-ऐ-हिन्द ने मांगी जब दूध की कीमत।
मादर-ऐ-हिन्द के बेटों ने अपनी जवानी दे दी।

14 फरवरी, 2021 को क्लस्टर कॉलोनी, कीर्ति नगर, दिल्ली में पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों द्वितीय पुण्यतिथि परं यज्ञ एवं देशभक्ति के गीतों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि हमारी संस्कृति में माँ की महत्ता सबसे अधिक है। हमारी दो मां हैं एक जिसने हमें जन्म दिया और दूसरी यह धरती जो हमारा पोषण कर रही है। एक ने हमें छाती का दूध पिलाया है तो दूसरी ने छाती चीरकर हमें अपना अन्न खिलाया है। राष्ट्र से बड़ा रक्त मूल्य नहीं हमें इदं राष्ट्राय इदं न मम के वाक्य को सार्थक करना है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के हुआ। समाज सेवी श्री संदीप भारद्वाज जी मुख्य यजमान थे। यज्ञ ब्रह्मा के रूप में आचार्य शिवा शास्त्री जी ने बहुत ही ओजस्वी उद्बोधन दिया।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामन्त्री एवं आर्य समाज कीर्ति नगर के प्रधान श्री सतीश चड्ढा जी ने भी कार्यक्रम में अपनी उपस्तिथि दर्ज कराई।

कार्यक्रम के संयोजक श्री राजू आर्य के सुपुत्र का स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद भी वह अस्पताल से कार्यक्रम की व्यवस्था संभालने के लिए आए। ऐसे समर्पण भाव के कारण ही आर्य समाज आज देश में परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। जोशीले गीत और सुरीली आवाज ने कार्यक्रम में देशभक्ति का रंग लगा दिया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
https://amzn.to/3i3rKl7
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह